प्रथम अध्याय

मन्नू भंडारी का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

अध्याय क्र. १

मन्नू भंडारी का जीवन परिचय

किसी भी साहित्यकार को जानना, उनकी कृतियों को समझना यूं तो आसान काम नही है। और मन्नू भंडारी जैसे सशक्त, बहुमुखी, बहुचर्चित प्रतिभासंपन्न व्यक्तित्व के बारे में तो क्या कहने ? इसलिए मन्नू भंडारी का परिचय प्राप्त करने के लिए हम उनके व्यक्तित्व को यहाँ दो विभागो में बाँटकर उसे समझने तथा समझाने की कोशिश कर रहें हैं।

अ] मन्नू भंडारी का व्यक्तित्व।

ब] मन्नू भंडारी का कृतित्व।

अब हम इन दोनों भागोंका एक-एक करके संक्षिप्त विश्लेषण यहाँ दे रहे है।

अ] मन्नू भंडारी का व्यक्तित्व :

ऐसा कहा जाता है कि वक्ता का परिचय उसके वक्तव्य से होता है, किसी गायक की पहचान उसके सुरों को सुनने के बाद होती है, ठीक उसी प्रकार अगर किसी कृतिकार के व्यक्तित्व को अगर आप जानना चाहते है, तो उनकी कृतियाँ ही उनके व्यक्तित्व की पहचान होती हैं। द्वितीय महायुध्दोतर काल में मनोवैज्ञानिक तथा समकालीन समस्याओंको उजागर करनेवाले महिला कहानीकारों और उपन्यासकारों में मन्नू भंडारीजी का नाम अग्रगण्य है। इतना ही नहीं तो हिंदी शोध एवं समीक्षा को भी उन्होंने अपनी ओर आकृष्ट कर लिया है।

मनुष्य का मन अत्यंत जटिल और विचित्र होता है। इसी कारण किसी व्यक्ति के अंतरंग का परिचय पाना अत्यंत कठिण काम होता है। उसी तरह

किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व का विश्लेषण करना भी बहुत ही कठिण होता है। मन्नू भंडारी जैसे सर्वश्रेष्ठ और बहुमुखी कलाकार के बारे में तो क्या कहे ? फिर भी हम इनके जन्म, माता-पिता, भाई-बहन, शिक्षा, विवाह और उनका पारिवारिक जीवन तथा उनका अध्यापकीय और प्राध्यापकीय जीवन साथ ही साथ उन्हें मिले हुये पुरस्कारोंके जरिए हम उनका परिचय करने की कोशिश करेंगे।

जन्म :- श्रीमती मन्नू भंडारी का जन्म ३ अप्रैल १९३१ को मध्यप्रदेश के भानुपुरा नामक छोटे से गाँवमें हुआ। मन्नू भंडारी का पूरा नाम "महेंद्रकुमारी" हैं, लेकिन घर में सबसे छोटी होने के कारण सब उन्हें प्यार से "मन्नू" पुकारते थे और यह नाम राजेंद्र यादव जी से शादी होने के बाद भी वही है॥

माता-पिता :- परम्परागत और रूढीग्रस्त मारवाड़ी परिवार में मन्नूजी का जन्म हुआ। मन्नूजी की माता की नाम अनुपकुंवारी था, जो एक अनपढ़ स्त्री थी। अनुपकुंवारी बहुत ही स्नेहिल स्त्री थी। जीवन में हर किसी को स्नेह देना ही सीखा था, किसी से लेना नहीं॥ उन्होंने अपने जीवन में किसी से भी कोई शिकायत नही की। अपने परिवार के लिए ही उन्होंने अपना जीवन मानो समर्पित कर दिया था॥

मन्नूजी के पिता का नाम सुखसम्पतराय था। परिवार में वे सबसे बड़े थे। उन दिनों देश में स्वतंत्रता आंदोलन की लहर जोरों पर थी॥ वे स्वतंत्रता आंदोलन से जुड़े हुअे, आर्यसमाजी तथा अपनी समय के समाजसुधारक भी रह चुके हैं, इसी कारण रुढ़िग्रस्त मारवाड़ी परिवार के होते हुये भी उन्होंने अपनी बेटियों को पढ़ाया।

मन्नूजी के पिता नितांत क्रोधी स्वभाव के, अहंवादी और आदर्शवादी थे। समाज-सेवी होने के कारण विभिन्न राजनीतिक दलों के लोगों से निरन्तर चर्चाएं और बहस उनके व्यक्तित्व का अंग बन चुकी थी। इतना ही नहीं तो हिंदी साहित्यजगत के वे जाने-माने व्यक्ति थे। उन्होंने हिंदी पारिभाषिक शब्दकोष

की रचना आठ भागोंमें की है। इसके अलावा उनकी कुछ अन्य रचनाएँ भी है। सुधारवादी होते हुये भी अपनी पुत्री का [मन्नूजी का] विवाह यादव से करने के पक्ष में नहीं थे। स्वयं मन्नूजी ने कहा है कि अगर एक बार वे राजेंद्र से मिलते तो उनके स्वभाव के कारण और बात-चीत करने के ढंग से निश्चित ही प्रभावित होते, किंतु ऐसा हुआ नहीं। सुखसम्पतरायजी की मृत्यु कैंसर से हुई थी।

माता-पिता के परस्पर विरोधी स्वभाव और मिले-जुले संस्कारों से ही मन्नूजी का व्यक्तित्व बना है। फिर भी मन्नूजी के व्यक्तित्व-निर्माण का श्रेय पर्याप्त मात्रा में उनके पिताजी को ही है। मारवाड़ी जैन समाज में प्रचलित धारणा के विपरीत लड़कियों को शिक्षा देना, राजनीति में हिस्सा लेने को प्रोत्साहित करना तथा रसोई घर में जाने नही देना आदि के कारण ही मन्नूजी शिक्षा-जगत् में पहुँच पायी है। अपना प्रथम कहानी संग्रह अपने पिता को अर्पित करते हुये उन्हों ने लिखा है -

"जिन्होंने मेरी किसी भी इच्छा पर कभी अंकुश नही लगाया-पिताजी को।"[१]

उपर्युक्त वाक्य इस बात का ठोस प्रमाण है कि उनके व्यक्तित्व मे चार-चाँद लगाने में उनके पिता का ही सबसे अधिक योगदान था।

भाई-बहन :- मन्नू भंडारीजी के दो भाई और दो बहने थी।

शिक्षा :- मन्नूजी की प्रारंभिक शिक्षा अजमेर के सावित्री गर्ल्स हाईस्कूल में हुई। वहीं से सन् १९४५ मे मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण की। सन १९४५-४७ तक आपने अजमेर के कॉलिज से ही इंटर किया। उन दिनों उस कॉलिज में शीला अग्रवाल और वसुमती मेनन नामक दो प्राध्यापिकाएँ थी, जो लड़कियों को अंग्रेज सरकार के

---

१. मन्नू भंडारी : मै हार गई-अर्पण-१९५७,
अक्षर प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली।

विरोध में तथा देशप्रेम से उकसाती थी। परिणाम स्वरूप मन्नूजी के हृदय में स्वतंत्रता की ऐसी ज्वाला भड़की कि यहाँतक नौबत आयी की उन प्राध्यापिकाओं को तो कॉलेज से निकलवा दिया और मन्नूजी को बी.ए. में प्रवेश लेने की अनुमति कमेटी ने नहीं दी॥ उस वक्त मन्नू ने इस बात के विरोध में कॉलेज बंद करवाया था। सन् १९४९ में उन्होंने कलकत्ता विश्वविद्यालय से बी.ए. किया॥ बी.ए. तक हिंदी विषय न होने के बावजूद भी उन्होंने बहिस्थ विद्यार्थी के रूप में काशी हिंदु विश्व-विद्यालय से सन् १९५२ में एम्.ए. किया।

अध्यापकीय जीवन :- कलकत्ता में "बालीगंज शिक्षा सदन" स्कूल में मन्नूजी ने सन् १९५२-६१ तक लगभग ९ साल तक अध्यापिका का कार्य किया॥ वे बहुत ही छात्र-वत्सल थी। किताबें पढ़ने के बेहद लगाव को देखकर ही उनके स्कूल के पुस्तकालय का भार उनके प्रधान अध्यापकजीने उन्हीं पर ही सौपा॥

राजेंद्र यादवजी से परिचय :- जब दो समरुचिवाले व्यक्तिओं का परिचय हो जाता है तो वह शीघ्र ही विशिष्ठता की श्रेणी गाठं लेता है। शायद इसी वजह से राजेंद्र यादवजी से उनका परिचय दिन-ब-दिन बढ़ता ही गया। उन दिनों राजेंद्र यादव लेखन क्षेत्र में काफी ख्याति अर्जित कर चुके थे और मन्नूजी का साहित्यिक जीवन उन दिनों प्रारंभ हो चुका था॥ उन्हीं दिनों राजेंद्र यादव का शोधकार्य [योगदर्शन और हिंदी साहित्य] भी कर रहे थे। साहित्यिक चर्चा करते-करते दोनों के मन में प्रेम के अंकुर का पल्लवन प्रारंभ हो गया। परिचय के पहले वर्ष ही उन्होंने विवाह का निर्णय भी ले लिया॥

। इस विवाह के संबंध में राजेंद्रजी कहते हैं कि -

"मन्नू, मैनें शादी तुमसे बहुत सफल अध्यापिका समझकर नहीं की थी, बहुत अच्छी लेखिका मानकर की थी॥"[२]

२.उ मन्नू भंडारी : श्रेष्ठ कहानियाँ - मेरा हमदम मेरा दोस्त - पृष्ठ-१८, अक्षर प्रकाशन, नई दिल्ली।

आगे उन्होंने लिखा है -

"लिखना और अधिक अच्छा लिखने का वातावरण बनाने का विश्वास ही हमें निकट लाया था।"[3]

सन् १९५९ में राजेंद्र यादवजी के साथ मन्नूजी का विवाह हो गया। उनका यह अंतर्जातीय विवाह था। सन् १९६१ में उन्होंने एक पुत्री को जन्म दिया। पति-पत्नि दोनों रचनाकार होने के कारण उन्होंने अपनी पुत्री का नाम भी शायद "रचना" ऐसा रखा है। लेकिन प्यार से "टिंकू" कहकर पुकारते है।

प्राध्यापकीय जीवन :- श्रीमती मन्नू भंडारी सन् १९६१ में अध्यापिका से प्राध्यापिका बनी। सन् १९६४ तक कलकत्ता में "राणी बिड़ला कॉलेज" में उन्होंने अध्यापन कार्य किया। इन्हीं दिनों राजेंद्र यादवजीने दिल्ली स्थायी होने का निर्णय लिया। अत: सन १९६४ में मन्नूजी का भी दिल्ली में आगमन हुआ। तब से लेकर आज तक मन्नूजी दिल्ली के प्रसिध्द सोफिस्टिकेटेड कॉलेज "मिरांडा हाउस" [दिल्ली विश्वविद्यालयसे संबध्द] में प्राध्यापिका के रूप में कार्यरत है। सप्ताह में एक दिन दिल्ली विश्वविद्यालय में भी पढ़ाने जाती है। उनके जीवन में अध्ययन और अध्यापन आजतक अबाध गति से चल रहा है।

व्यक्तित्व :- मन्नूजी आचरण में सादगी पसंद आदर्श भारतीय नारी है। बस उन्हें एक बार देखते मात्र से ही उनके माथे की बड़ी बिंदी याद रहती है। मन्नूजी का रहन-सहन अत्यंत सीधा है।

"गहरे पीले सिल्क की साड़ी में लाल बार्डर, मरून कडिंगन और शॉल ओढ़े ऐसी दिखाई देती हैं कि लगता ही नहीं कि वे प्रसिध्द लेखिका है।"[4]

---

३. राजेंद्र यादव : औरों के बहाने : पृष्ठ : ५१

४. अनिता राजूरकर : कथाकार मन्नू भंडारी : पृ. ७ : नॅशनल पब्लिशिंग, नई दिल्ली।

कुछ इसी प्रकार के विचार गिरिराज किशोरजी ने "मन्नू भंडारी: जिंदगी की समझदारी" लेख में लिखा है -

"मन्नूजी की पहचान उस बिंदी से शुरु हुई थी और आज रचनाओं तक पहुँच गयी है।... मन्नूजी को पहली बार देखकर यह प्रश्न जरूर मन में आया कि क्या ये ही वो हैं जो कहानियाँ लिखती है ? महिला कहानी लेखिकाओं को देखने और उन्हें एक विशिष्ट रूप में स्विकार करने की आदत के फलस्वरूप मन्नूजी कहानी लेखिका उतनी नहीं नजर आती जितनी घरेलू स्त्री।"[५]

सुश्री रमा शर्मा ने भी फेमिना के कालम "पर्सनालिटी" में लिखती है - "If one is to go by appearance, Mrs. Mannu Bhandari has the most deceptive one, clad in simple green silk saree, simple hair style, medium height, wheatish complexion and despect-aded mannu appears more or less like a mild-midde aged house wife. It is difficult that to believe that she has been lecturer of Hindi for the last eleven years with the most glamorous college of girls in Delhi, Miranda House".[6]

---

५. गिरिराज किशोर : मनोरमा : अक्तूबर, १९७७ : पृ. ६

6. Rama Sharma: Femina; Feb. 8, 22, 1983.

सोना [नींद] मन्नूजी की प्रिय हॉबी है। मीठा खाने से उन्हें सख्त नफरत है। अपनी वाक्पटुता अत्यंत निर्भयता और निडरता से दो टूक में बात कर सकती हैं किंतु छिपकली से बहुत डरती है। मन्नू जी के स्वभाव के बारें में लिखते हुये उनके पति राजेंद्र यादवजी एक जगह पर लिखते है -

"मुझे लगता है कभी-कभी यह मन्नू की उदारता नहीं है, उसकी मूलभूत प्रकृती, अधिरता ही की एक अभिव्यक्ति है। अधीरता अर्थात् असहिष्णुता ... मन्नू का दुसरा नाम है। कोई भी काम मन के खिलाफ हो जाये, यानी अनुकूल न हो ... मन्नू को जिन्दगी बेकार और बेमानी नजर आने लगती है।"[७]

शाम के समय नहा-धोकर एकदम धोबी के धुले सफेद कपड़े पहनकर, बहुत अधिक यूनेवाला पान खाते हुए लिखना उसे सबसे अधिक प्रिय है। अपने आधुनिक दृष्टिकोण के बावजूद भी मन्नूजी भीतर से वही "सदियों" पुरानी दकियानूसी पत्नी है ऐसा राजेंद्रजी कहते हैं।

पुरस्कार :- भारतीय भाषा परिषद की ओर से साहित्यिक पुरस्कार दिया जाता है। १९७६-८० मे प्रकाशित हिंदी भाषा में सर्वश्रेष्ठ साहित्यिक कृति के लिए "रामकुमार भुवालका" पुरस्कार मन्नू भंडारी ["महाभोज" नामक उपन्यास] को प्राप्त हुआ है। पुरस्कार राशि ११,000/- रू. है।

उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान व्दारा "महाभोज" उपन्यास को पुरस्कृत किया गया है। पुरस्कार की राशि ६,000/- रू. है।

---

७. मन्नू भंडारी : श्रेष्ठ कहानियाँ : मेरा हमदम मेरा दोस्त। :पृ. २४, अक्षर प्रकाशन, नई दिल्ली।

शिमला के ऑल इंडिया आर्टिस्टस् एसोसियेशन व्दारा अखिल भारतीय बलराज साहनी स्मृति साहित्य प्रतियोगिता में प्रमुख क्रांतिकारी लेखक श्री मन्मथनाथ गुप्त तथा हिंदी कहानीकार श्रीमती मन्नू भंडारी को उनके रचनात्मक लेखन व्दारा मानवता की सेवा के लिए १९८२-८३ वर्ष का क्रमशः भारतेंदु हरिश्चंद्र एवार्ड तथा पीपल्स एवार्ड देकर सम्मानित किया गया है।[८]

पुरस्कारों की अस्वीकृति :- मन्नू भंडारी को सन् १९७६ में आपात् स्थिति के दौरान "पद्मश्री" पुरस्कार दिये जाने का निर्णय हुआ था, फिर साहित्य कला परिषद दिल्ली ने भी उन्हें पुरस्कृत करना चाहा था किन्तु दोनों ही पुरस्कार उन्होंने विनयपुर्वक अस्वीकार कर दिए।[९]

इस तरह मन्नू भंडारी बहुगुणी और सर्वश्रेष्ठ प्रतिभासंपन्न कलाकार है।

ब] मन्नू भंडारी का कृतित्व :

स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कथा साहित्य के विकास में श्रीमती मन्नू भंडारीजी का विशेष योगदान रहा है। नयी कहानी के आंदोलन में मन्नूजी का नाम कुछ अधिक चर्चित रहा है। कथा साहित्य में गुण तथा मात्रा की दृष्टि से श्रीमती मन्नूजी ने नई कहानी को एक विशेष रूप देने में सफलता प्राप्त की है। पाठयपुस्तकों एवं पत्र-पत्रिकाओं के विशेषांकों में उनका अध्ययन और उनकी समीक्षा कहानीकार के रूप में ही हुई है। श्रीमती मन्नू भंडारी के साहित्यिक-व्यक्तित्व का अस्सी प्रतिशत भाग कहानी-साहित्य पर ही निर्भर है। उनके कहानी संग्रह जो अबतक प्रकाशित हो चुके है उनका विवरण इस प्रकार दिया गया है।[१०]

---

८. दै. ट्रिब्यून : चंडीगढ : सितंबर २०, १९८२

९. पांचजन्य : जून २७

१०. अनीता राजूरकर : कथाकार मन्नू भंडारी : पृ. १८,
प्रकाशक : नॅशनल पब्लिशिंग हाउस, नयी दिल्ली।

कहानी संग्रह	प्रकाशक	सन्
१. मैं हार गई	राजकमल प्रकाशन, दिल्ली	१९५७
२. तीन निगाहों की एक तस्वीर	श्रमजीवी प्रकाशन, इलाहाबाद	१९५९
३. यही सच है	अक्षर प्रकाशन, दिल्ली	१९६६
४. एक प्लेट सैलाब	अक्षर प्रकाशन, दिल्ली	१९६८
५. त्रिशंकु	अक्षर प्रकाशन, दिल्ली	१९७८

मन्नूजी के समस्त कहानी-साहित्य से चयन कर तीन अलग अलग प्रकाशकों ने उनके विशेष कहानीसंग्रह प्रकाशित किये है। [११]

कहानी संग्रह	प्रकाशक	सन्
६. श्रेष्ठ कहानियाँ	अक्षर प्रकाशन, दिल्ली	१९६९
७. मेरी प्रिय कहानियाँ	राजपाल एन्ड सन्स, दिल्ली	१९७९
८. सप्तपर्णा	नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली	१९८२

"असामीयक मृत्यु" मनोरमा नामक कहानी पत्रिका में अक्तूबर, १९७७ में प्रकाशित हुई। "अंकुश" कहानी धर्मयुग ९ अप्रैल, १९६१ के अंक में प्रकाशित हुई थी।

इस प्रकार कुल मिलाकर ४८ कहानियाँ अभितक प्रकाशित हुई है।

मन्नूजी न कि सिर्फ सफल कहानीकार ही है। बल्कि साथ-साथ वह एक सिद्धहस्त उपन्यासकार भी है। यह उन्होंने अपने उपन्यास कृतियो के माध्यम से हमें दिखाया है। मन्नूजी के उपन्यासों का विवरण इस प्रकार दिया जा सकता है -

---

११. अनीता राजूरकर : कथाकार मन्नू भंडारी : पृ. १८,
प्रकाशक : नॅशनल पब्लिशिंग हाउस, नयी दिल्ली।

उपन्यास का नाम	प्रकाशक	सन्
१. एक इंच मुस्कान [राजेंद्र यादव के साथ-सहयोगी उपन्यास]	राजपाल अँण्ड सन्स, नई दिल्ली	१९६३
२. आपका बंटी	अक्षर प्रकाशन, नई दिल्ली	१९७१ [प्रथम संस्करण]
३. महाभोज	वाणी प्रकाशन, दिल्ली राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली	१९८० [द्वितीय आवृत्ती]
४. स्वामी	नॅशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली	१९८६ [चतुर्थ संस्करण]
५. कलवा [बाल उपन्यास]		

उपन्यास और कहानी के अतिरिक्त मन्नूजी ने दो नाटक भी लिखे हैं। वे इस प्रकार है -

१. बिना दिवारों के घर

२. महाभोज

इस प्रकार कहानीयाँ, उपन्यास तथा नाटक के क्षेत्र में मन्नूजी-पाठकों और आलोचकों की दृष्टि में एक सिद्धहस्त सफल लेखिका है।